In Absentia: वियोग का मार्मिक सच

संध्या गर्ग

In Absentia स्वाति पाल का काव्य संग्रह है, जो हिंदी कविता की इस पंक्ति का जीवंत उदाहरण है- "वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान।"

सच ही खुशी के क्षण को हम जीते हैं तथा वियोग और दुख के क्षण सदा हममें जीवित रहते हैं। अंग्रेजी कविताओं का यह संकलन स्वाति के पुत्र दिवाकर की स्मृति को समर्पित है और हर उस व्यक्ति के हृदय की पीड़ा का चित्र है जिसने अपने किसी प्रिय जन को खोया है।

संभवतः पाठकों के मन में यह प्रश्न उठे कि अंग्रेजी कविताओं की समीक्षा हिंदी में क्यों? तो उत्तर है कि पहला तो भावों की कोई भाषा नहीं होती है, हृदय होता है और अभिव्यक्ति की भाषा मेरी हिंदी है अतः उसी में इस संकलन की कविताओं पर कुछ लिखने का मन हुआ। संकलन की भूमिका में ही कवयित्री ने लिखा है-

Gentle reader,

may he take life in your eyes as you read these poems.

यह है स्मृति, जो किसी की अनुपस्थिति में भी उसे हृदय में, आंखों में जीवित रखती है, वही इस संकलन का आधार है। *In Absentia* का हिंदी अर्थ है "किसी की अनुपस्थिति में, किसी के बिना" । संग्रह की अधिकतर कविताएं इसी भाव से अनुप्राणित हैं।

पहली ही कविता " With you my boy " उस अनुपस्थिति को साकार करती है। कोई जीवन में नहीं है परंतु संभवतः कहीं और जाकर और अधिक निकट हो गया है। अपनी मां की प्रत्येक इच्छा को पूर्ण करने के लिए जैसे और अधिक संकल्प बद्ध पुत्र की ये चेष्टाएं मां के जीने का कारण है।

वहीं दूसरी ओर ऐसी अनेकानेक स्मृतियां भी हैं जो जीना कठिन कर देती है -

The Game We Played,

Not A Memorial,

Every Bit Of You,

What Happy Was

ऐसी अनेक कविताएं हैं जो उन स्मृतियों का खज़ाना हैं जिन्हें संभवतः उस समय, उन क्षणों में उतना अनुभव नहीं किया गया जितनी वो अनुपस्थिति में हृदय के निकट हैं। किसी भी प्रिय के साथ बिताए गये क्षण और वह भी अच्छे क्षण मन की पीड़ा पर कभी मलहम का कार्य करते हैं तो कभी मन के घावों को कुरेद देते हैं।

संकलन में कुल 52 कविताएं हैं, जिनमें से 51 कविताएं स्वाति पाल की हैं और अंतिम कविता उनके पुत्र दिवाकर द्वारा रचित है। कुछ कविताएं व्यक्तिगत स्तुति को समर्पित है परंतु कुछ में दुःख, वियोग, पीड़ा का साधारणीकरण भी हुआ है। कविता सीधे दिल में उतरती है, कविता पढ़कर मुख से वाह नहीं निकलता बल्कि एक गहरी चुप्पी छा जाजाती है, संभवतः यह भी समभाव की अभिव्यक्ति का ही एक रूप है।

An absence

That is

Ever Present

Is much

Like a tree

That is

Worm eaten

बाहर से मजबूत दिखाई देता वृक्ष जैसा मन जो कि अंदर किसी की अनुपस्थिति में खोखला हो चुका है। कवयित्री के भाव भाषा, शैली, अलंकार के मोहताज नहीं हैं पर फिर भी अनायास ही काव्य की कसौटी पर हर दृष्टि से खरे उतरते हैं।

One day/ we will / all / become / A memory

जीवन का कटु पर अंतिम सत्य है। और उसी समय के लिए ही हमें कुछ ऐसा कर लेना है कि हमारी स्मृति औरों के लिए सुखद हो। A MOTHER'S LOVE- मां बेटे के उस अप्रतिम प्रेम की व्याख्या है जो कोख से प्रारंभ होता है और जीवन पर्यंत रहता है। ऐसे ही इस प्रेम को अतुलनीय नहीं कहा गया ।

अंतिम कविता दिवाकर की है - AE (DRASTIC ALTER EGO) । एक युवा मन के प्रश्न, समाज के ठेकेदारों को ले कर उसका क्रोध और अपने मन अनुसार जीने की इच्छा सभी कुछ समेटे यह कविता प्रश्न उछालती है

Sometimes I just sit and wonder

as to why people judge

सच ही है, अपने बनाए हुए कुछ प्रतिमानों में हम हर व्यक्ति को फिट करना चाहते हैं, भूल जाते हैं कि प्रत्येक मानव ईश्वर की एक विशिष्ट कृति है।

लिखने को प्रत्येक कविता एक लंबी व्याख्या मांगती है पर वास्तव में यह अनुभूति है जो मन को छू जाती है, उस क्षण उस पीड़ा का भागीदार बनाती है। दुःख तथा वियोग पहले व्यक्ति को चीखने पर विवश कर देते हैं फिर एक लंबी चुप्पी छा जाती है और इस सब में दबी भावनाएं जब शब्दों में ढलती है तो *In Absentia* की रचना होती है।

हर उस व्यक्ति को यह काव्य संग्रह पढ़ना चाहिए जो दुःख को समझता हैं, जिसे दुःख परिष्कृत करता है। संग्रह आपके समक्ष हैं अपनी राय आप बनाने के लिए आप स्वतंत्र हैं।

Swati Pal , *In Absentia*, Hawakal *Publishers*, N.D. Calcutta , First edition June 2021, Total No. of pages:103.